17

सशस्त्र सेनाएँ और आपदा प्रबंधन

भारत के सशस्त्र बलों को आपदा प्रबंधन में विशेष भूमिका निभानी होती है, विशेषतया प्रभावित लोगों को राहत पहुँचाने में तथा जल-आपूर्ति, संचार व्यवस्था और बिजली आपूर्ति को पुनर्स्थापित करने में। आप भारत में आई आपदाओं से परिचित होंगे। जैसे लातूर में आया भूकंप, 2015 में चेन्नई में आई बाढ़, 2013 में उत्तराखंड में आई बाढ़, 2004 में सुनामी और 2018 में केरल में आई बाढ़ इत्यादि। इन सभी घटनाओं में भारत के सशस्त्र बलों की महत्वपूर्ण भूमिका थी।

यद्यपि सशस्त्र बल मुख्य रूप से बाहरी खतरों से देश की सुरक्षा में शामिल रहते हैं, परंतु अब उन्हें अपने देश तथा पड़ोसी देशों में आई आपदाओं के प्रबंधन में भी अधिकाधिक शामिल किया जा रहा है। ऐसे स्थितियों से निपटने में उनकी तीव्रता और क्षमता ने उन्हें इस प्रकार की आपदाओं से निपटने वालों की प्रथम पंक्ति में सबसे पहले स्थान पर जा खड़ा किया है।

उद्देश्य

इस पाठ का अध्ययन करने के बाद, आप :

- आपदा तथा आपदा प्रबंधन की आवश्यकता को परिभाषित कर सकेंगे;
- आपदा प्रबंधन में भारतीय सेना की भूमिका को समझ सकेंगे;
- राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन टीम के संगठन एवं कार्यों की व्याख्या कर सकेंगे;
- चक्रवात के बाद 'क्या करें' और 'क्या न करें' का अभ्यास कर सकेंगे।

17.4 आपदा का अर्थ

आपदा ऐसी घटना है जो अचानक घटती है और मनुष्यों, पशुओं और पर्यावरण को व्यापक क्षति पहुँचाती है। इसमें मनुष्यों, संपतियों और आर्थिक अथवा पर्यावरण की भारी क्षति होती है। आपदाओं को प्राकृतिक एवं मानव निर्मित के रूप में वर्गीकृत किया जाता है।

प्राकृतिक आपदाएँ प्रकृति में घटने वाले सारे संकट हैं-जैसे भूकंप, भू-स्खलन, ज्वालामूखी फटना, बाढ़, सुनामी और चक्रवात इत्यादि जिनके कारण मानव जीवन और संपति की बड़ी क्षति होती है। मानव निर्मित आपदाएँ मनुष्यों की सक्रियता अथवा निष्क्रियता के कारण उत्पन्न होती हैं। इनमें औद्योगिक दुर्घटनाएँ, परिवहन दुर्घटनाएँ, तेल का रिसाव और फैलाव, परमाणु विस्फोट, आग अथवा भीड़ बढ़ने और रास्ता रुकने की घटनाएँ शामिल होती हैं।

प्राकृतिक आपदाएँ-

- भूकंप
- बाढ़, शहरी बाढ़
- चक्रवात
- भू-स्खलन
- सुनामी
- गर्म हवाएँ चलना

मनुष्य निर्मित आपदाएँ

- परमाणु, जैविक और रसायनिक
- शत्रुओं में तेल का फैलना
- प्रदूषण

17.1.1 आपदा प्रबंधन

प्राकृतिक घटनाओं को तो नहीं रोका जा सकता परंतु उनके प्रभावों को संभाला जा सकता है। लोगों को मरने से बचाया जा सकता है और सामान्य जीवन को पुनर्रथापित किया जा सकता है। इस प्रक्रिया को आपदा प्रबंधन कहते हैं। प्राकृतिक आपदाओं के परिणाम स्वरूप घरों, पशुओं लोगों और संपतियों की हानि होती है।

अत: पहला कार्य भोजन, कपड़े और दवाईयों को प्रभावित लोगों तक राहत सामग्री के रूप में पहुँचाना है। खोए हुए लोगों और जानवरों को खोजना और बचाना भी आपदा प्रबंधन का एक भाग है। क्योंकि प्राकृति आपदाएँ सड़कों, पुलों, रेलवे लाईनों और बिजली की आपूर्ति को प्रभावित करती हैं इसलिए इनकी पुर्नव्यवस्था करना भी आपदा प्रबंधन टीमों का एक मुख्य कार्य है।

17.2 सशस्त्र बल और आपदा प्रबंधन

भारत में आपदा आने पर सबसे पहले सशस्त्र बलों को लगाया जाता है। उनके पास किसी भी स्थिति से निपटने के लिए यंत्र, प्रशिक्षण तथा व्यवसायिक कौशल होता है। नागरिक सुरक्षा व्यवस्था के न होने के कारण आपदा के समय सशस्त्र बलों पर निर्भर होना पड़ता है। तेल बिखरने, परमाणु दुर्घटना जैसे कुछ विशेष आपदाओं में विशेष प्रकार के यंत्रों तथा प्रशिक्षण की

आवश्यकता होती है। सशस्त्र बलों के पास बड़ी संख्या में लोगों तथा सामान को एक स्थान से दूसरे स्थान तक हवाई मार्ग से ले जाने की क्षमता और योग्यता होती है। खोजने और बचाव कार्यों में उनका कोई मुकाबला नहीं हैं। सशस्त्र बल क्षतिग्रस्त सड़कों की मरम्मत तथा अस्थायी पुल बनाने के लिए मशीनें और यंत्र भी ला सकते हैं।

17.2.1 भारतीय सेना द्वारा आपदा राहत के उदाहरण

आपदा प्रबंधन से निपटने के लिए सबसे पहले पहुँचने वालों में भारतीय सेना आती है। 2004 में आई सुनामी में भारतीय सेना ने शांति के समय की सबसे बड़ी राहत कार्रवाई को चलाया। भारतीय सेना ने न केवल भारत में ही अपितु अन्य देशों जैसे मालदीव, श्रीलंका, इंडोनेशिया में सुनामी के शिकार हुए लोगों की सहायता की। नौसेना के जहाज़ों, हेलीकॉप्टर्स और विमानों का प्रयोग करके भारतीय नौसेना ने पीने का साफ़ पानी, भोजन, दवाइयाँ, स्वच्छता और आश्रय की आपूर्ति की। उन्होंने तेजी से बिजली और पानी की आपूर्ति को बहाल किया। चिकित्सकीय दलों ने महामारियों और बीमारियों को फैलने से रोकने में सहायता की।

- वर्धा चक्रवात के दौरान भारतीय सेना ने समुद्री जहाज़ों को प्रयोग करके आपूर्ति का कार्य किया। प्रभावित लोगों तक विमान से सामान गिरा का पहुँचाया तथा घायल और फंसे हुए लोगों को विमानों की सहायता से बचाया।
- अप्रैल 2015 में आए भूकंप से पड़ोसी देश नेपाल बुरी तरह प्रभावित हुआ था और उस समय सबसे पहले राहत सामग्री और प्राकृतिक आपदा के बाद के स्थिति को संभालने के लिए भारतीय सेना के जवान पहुँचे। भारतीय सेना द्वारा 'ऑपरेशन मैत्री' चलाया गया जिसमें बड़े ट्रांसपोर्ट विमानों तथा एम-17 हेलिकॉप्टर्स ने भारतीय और विदेशी नागरिकों को निकाला। भारतीय वायु सेना चिकित्सकीय लोगों, इंजिनियरों के दलों, पानी, भोजन, कंबल और टैंट लेकर पहुँची।
- नवंबर-दिसंबर 2017 में ओखी चक्रवात ने कन्याकुमारी तथा केरल और लक्षद्वीप के तटों को नष्ट कर दिया था और तब वहाँ भारतीय सेना ही राहत कार्य में जुटी हुई थी। भारतीय नौसेना चार टन खाद्य सामग्री, पानी, कंबल, रेनकोट, मच्छरदानियाँ ले कर लक्षद्वीप पहुँची थी। इसमें गुम हुए मछुआरों को खोजने तथा प्रभावित लोगों तक राहत सामग्री पहुँचाना शामिल था।

मानव निर्मित आपदाओं में भी सशस्त्र बलों ने व्यापक सहायता की है। टैंकर जहाज़ों पर समुंद्र में दुर्घटनावश फैले तेल से सशस्त्र बल ही निपट सकते हैं क्योंकि उनके पास विशेष उपकरण और प्रशिक्षण होता है।

17.3 राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण

आपदाओं से निपटने के लिए भारत के पास 'राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण' नाम का संगठन है। इनके पास प्रत्येक राज्य और केंद्र में रिस्पांस टीमें हैं। केंद्र की रिस्पांस टीम को राष्ट्रीय आपदा राहत बल (एन.डी.आर.एफ.) कहा जाता है। राज्य के स्तर पर इनको राज्य आपदा राहत थल (एस.डी.आर.एफ.) कहा जाता है। इन रिस्पांस टीमों से भारतीय सेना द्वारा प्रशिक्षण दिया जाता है।

राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण की सोच

''संपूर्ण सक्रिय प्रौद्योगिकी से उत्प्रेरित और चिरंजीवी विकास की रणनीति द्वारा भारत को सुरक्षित एवं आपदा प्रत्यास्थी (सहने में सक्षम) बनाना जिसमें सभी हितधारक शामिल हों तथा रोकथाम, तैयार रहने और प्रभाव कम करने की संस्कृति को पैदा करना।''

बाढ़ के दौरान, करें :-

बिजली और गैस कनेक्शन को बंद करें तथा गैस लीक होने के प्रति सतर्क रहें

सीवर लाईनों, गटर और नालियों से दूर रहें

निचले क्षेत्रों को खाली कर दें और सुरक्षित स्थान पर चले जाएँ

बिजली के खंभों और गिरी हुई बिजली की तारों से दूर रहें

उबला हुआ/क्लोरीनिकृत पानी पीजिए

टूटे हुए बिजली के खंभों, तारों और नुकीली वस्तुओं तथा मलबे से सावधान रहें

एनडीएमए द्वारा बाढ़ के लिए जारी किया पोस्टर

टिप्पणी

17.4 क्या करे और क्या ना करे

1. चक्रवात से पहले

- अफवाहों से बचें, शांत रहें, घबरायें नहीं
- अपने फ़ोन को बातचीत के लिए चार्ज रखें, एस.एम.एस. का प्रयोग करें
- रेडियो और टी.वी. देखिए तथा मौसम की जानकारी के लिए अखबार पढें
- अपने कीमती कागजों (प्रपत्रों) और कीमती सामान को वाटर प्रूफ डिब्बे में रखिए
- एक आपातकालीन किट बनाएँ जिसमें सुरक्षा और जीवन के लिए आवश्यक वस्तुएँ रखें
- अपने घर को सुरक्षित रखें, घर की मरम्मत करवाएँ तथा नुकीली चीजें खुली न रखें
- पशुओं और जानवरों को सुरक्षित रखने के लिए खुला छोड़ दें

मछुआरों के लिए-

- अपने साथ अतिरिक्त बैट्रियों के साथ एक रेडियो सेट रखें
- नावों/रैपैफट बेडेडस को सुरक्षित स्थान पर रखें
- समुद्र में न जाएँ

2. चक्रवात के दौरान और बाद में

अ) यदि घर के अंदर हैं, तो-

- बिजली को मेन स्विच और गैस कनेक्शन बंद कर दें
- दरवाज़ों और खिड़कियों को बंद रखें
- यदि आपका घर असुरक्षित हो तो आप तूफ़ान से पहले घर छोड दें
- रेडियो/ट्रांसिस्टर सुनिए
- उबला हुआ/क्लोरीनीकृत पानी पीजिए
- केवल सरकारी चेतावनी को ही सुनिए

ब) यदि घर से बाहर हो, तो-

- क्षतिग्रस्त भवनों में न जाएँ
- बिजली के टूटे खंबों, तारों और नुकीली चीज़ों का ध्यान रखें
- जितनी जल्दी हो सुरक्षित ठिकाना ढूँढ लें

चक्रवाती तूफान के लिए एनडीएमए द्वारा जारी एक पोस्टर

पाठगत प्रश्न 17.1

1. निम्नलिखित कथनों को असत्य अथवा सत्य लिखिए-

   (a) सुनामी मानव निर्मित आपदा है।

   (b) एन.डी.एम.ए. का अर्थ राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण है।

   (c) घर में बिजली और गैस के कनेक्शन बंद कर दें।

2. आपदाओं के प्रबंधन के लिए सेना की कौन से विशेषताएँ अनुकूल हैं।

आपने क्या सीखा

- आपदाएँ ऐसी घटनाएँ हैं जो अकस्मात घटती हैं और मनुष्यों और जानवरों को बड़ी क्षति पहुँचती है।
- आपदाएँ दो प्रकार की होती हैं। मानव निर्मित और प्राकृतिक।

- आपने यह भी पढ़ा कि सामान्य लोगों को प्रभावित करने वाली आपदाओं से कैसे निपटा जाता है।
- भारतीय सैनिकों द्वारा विभिन्न प्रकार की कार्रवाइयाँ चला कर लोगों की सहायता करने में निभाई गई भूमिका प्रेरणा का स्त्रोत है।
- भारत के पास अब राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण है और सारे भारत में आपदा राहत कार्रवाइयाँ करने के लिए आवश्यक लोग हैं।
- देश में एन.डी.आर.एफ. और राज्य में एस.डी.आर.एफ. हैं।
- भारत की सेना के पास किसी भी प्रकार की आपदा में सहायता प्रदान करने की क्षमता और योग्यता है और तुरंत राहत पहुँचाने के लिए सबसे पहले बुलाए जाते हैं।
- संकटकालीन स्थिति से निपटने के लिए संकट के दौरान, पहले और बाद में 'क्या करें और क्या न करें' को जानना बहुत जरुरी है।

पाठान्त प्रश्न

1. आपदा प्रबंधन में सशस्त्र बलों की भूमिका के उदाहरणों की सहायता से स्पष्ट कीजिए।
2. आपदा प्रबंधन में सशस्त्र बलों की योग्यता का आकलन आप उदाहरणों की सहायता से कैसे करेंगे।
3. एन.एस.डी.ए. का विस्तृत रूप क्या है? इसके संगठन और कार्यों का वर्णन कीजिए।
4. समुद्री तूफ़ान (चक्रवात) से पहले कौन-सी पाँच चीजें करनी चाहिए और कौन सी तीन चीजें नहीं करनी चाहिए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

17.1

1. (i) असत्य

   (ii) असत्य

   (iii) सत्य
2. अनुशासन, प्रशिक्षण ओर व्यवसायिक रिस्पांस